INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

"भारतीय शिक्षा व्यवस्था में मूल्यपरक शिक्षा का महत्व"

Importance of Value Education in Indian Education System

हेमलता शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर,
विवेकानन्द कॉलेज ऑफ एजूकेशन्,
अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/03.2025-38734382/IRJHIS2503025

सारांश :

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य शिक्षा में मानवीय मूल्यों की आवश्यकता एवं महत्व का ज्ञान कराना है। वर्तमान समय बहुत प्रतिस्पर्धा का समय है। वर्तमान समय में मनुष्य भौतिक वस्तुओं के पीछे भागता जा रहा है और उस भागदौड में वह मानवीय मूल्योंनैतिक मूल्यों, चारित्रिक मूल्यों एवं आध्यात्मिक मूल्यों की निरन्तर उपेक्षा किये जा रहा है। ऐसे विकट मूल्य संकट के समय में शिक्षा ही एक ऐसा उपकरण है जो समाज को इस परिस्थिति से वाहर निकाल सकती है। शिखा द्वारा मानव व्यवहार में परिवर्तन एवं परिमार्जन कियाजाता हैं । शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति भारतीय मूल्यों का महत्व जान पाता है कि जीवन में मानवीय मूल्य सबसे महत्वपूर्ण है। मूल्यों का हमारे जीवन में इतना महत्व है कि इनके लिये व्यक्ति किसी भी अन्य वस्तु से समझौता नहीं कर सकता। ईमानदारी, अखंडता, प्रेम, सहिष्णुता, खुशी कुछ ऐसे मूल्य हैं जिन्हें मुनष्य अभ्यास करना प्राप्त करना और उसके साथ अपना जीवन विताना चाहता हैं इनके अतिरिक्त सम्मान, स्वीकृति, विचार, प्रशंसा, सुनना, स्नेह, सहानुभूति और मानव मात्र के प्रति प्रेम भी प्रमुख मानव मूल्य हैं जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। लेकिन इन सभी मानवीय मूल्यों की प्राप्ति का लक्ष्य शिक्षा के द्वारा ही सम्भव हो सकता है। शिक्षा ही मूल्यों व संस्कृति का हस्तांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में करती है। आधुनिक समय में इन मूल्यों की आवश्यकता और भी अधिक है। वर्तमान समय में मूल्योंकी गिरावट की वजह से विशेष आवश्यकता है कि हम पाठ्क्रम में महत्वपूर्ण मानवीय व नैतिक मूल्यों को स्थान दें। यह शोध पत्र भारतीय समाज में मानवीय मूल्यों का शिक्षा के द्वारा कैसे प्रसार किया जा सकता है इसकी चर्चा करता है। इसके साथ ही शिक्षा में मानवीय मूल्योंके प्रसार में कौन-कौन से तत्व बाधक हैं इनकी भी व्याख्या करता है।

मुख्य शब्द : *शिक्षा, भारतीय समाज, मानव मूल्य नैतिक मूल्य*

भूमिका :

शिक्षा जीवन मूल्यों के सम्प्रेषण में उत्प्रेरक का कार्य करती है। इस शिक्षा रूपी उत्प्रेरक का संवाहक व्यक्ति होता है शिक्षाऔर मूल्य दोनों प्रत्येक व्यक्तिके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। शिखा का सर्वाधिक सक्रिय साधन गुरू होते हैं । गुरू का हृदय शुद्धचरित्र निर्मल होता है। गुरू का विश्वास उनकी शिक्षा छात्रों पर अधिक प्रभाव डालती है। वह गुरू के पद चिन्हों पर चलने की कोशिश करते हैं ।शिक्षा के जीवन मूल्यों में हमको समाज की सामाजिक सांस्कृतिक नैतिकता की झलक दिखाई देती है। छात्रों को मूल्यपरक शिक्षा देना प्रत्येक समाज का

दायित्व है। व्यक्ति का व्यक्तित्व ही मूल्यों का छिपा हुआ पाठ्यक्रम है। मूल्यपरक शिक्षा का परम उद्देश्य यही होता है किवह व्यक्ति इनको अपने व्यवहार में लायें तथा प्रत्येक छात्र इससे प्रेरित होकर अपने आपमें आत्मसात करें। आजकल हम देखते हैं कि शिक्षा के मूल्यों में गिरावट आ गयी है। मूल्यपरक शिक्षा देने का दायित्व विद्यालय और उनके शिक्षकेां का है किन्तु कुछ विद्यालयों का शिक्षास्तर धनकी वजह से गिरता जा रहा है। शिक्षा के समस्त क्षेत्रेां में मूल्य शिक्षा के विकास की संभावनाओं का पता लगाया जाये वर्तमान वातावरण में शिक्षाएक व्यापार बन कर रह गयी है प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ नकुछ मूल्य अवश्य होते हैं। मूल्य परक शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तिका सर्वांगीण विकास करना है।

आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है इसमें व्यक्ति की सोच बदल रही है। अब छात्र अपने को वर्तमान परिवेश में स्वयं को स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा है। मूल्यपरक शिक्षा हमारे देश को दुर्भावना,बेईमानी, भ्रष्टाचार, शोषण जैसी बीमारियों से लडने की शक्ति प्रदान करती है। जो शिक्षा मूल्यों से सम्बन्ध रखती है, वह मूल्य शिक्षा कही जाती है। मूल्य व्यक्ति की पसन्द या नापसन्द की और इंगित करते हैं। वास्तव में देखा जाये तो किसी भी व्यक्ति का पूर्ण व्यवहार उन मूल्यों की परिधि के अन्तर्गत संचालित होता है जिन्हें वह महत्वपूर्ण समझता है।

व्यक्ति---व्यवहार----मूल्य

मूल्य का अर्थ एवं परिभाषा:

मूल्य को अंग्रेजी में टंसनम कहते हैंValue लैटिन भाषा के Value (वंलियर) से बना है जिसका अर्थ है Ability Utility importance तथा हिन्दी अर्थ है- योग्यता उपयोगिता व महत्व। शाब्दिक अर्थ के आधार पर हम कह सकते हैं कि व्यक्ति या वस्तु का वह गुण जिसके कारण उसका महत्व, सम्मान या उपयोग समझा जाता है वह मूल्य है। इसमें विभिन्न विचारकों के विभिन्न मत हैं-

- लघुवाद के शब्दों में मूल्य वह है जो मनुष्य की इच्छा को तृप्त करते हैं।
- विकासवादी के शब्दों में मूल्य वह है जो जीवन बर्धक हैं।
- पूर्णवादी के शब्दों में मूल्य वह है जो आत्मा को लाभ देते हैं।

विभिन्न विचारकों की विभिन्न परिभाषाए हैं ये तीन श्रेणियों में विभक्त हैं-

1. दार्शनिक विचारधारा

a. वैयक्ति परिभाषाऐं -

ई. एस. ब्राइटमेन (By E.S. Brightman) के द्वारा "प्रारम्भिक अर्थ में मूल्य से अभिप्राय है जो व्यक्ति वास्तव में पसन्द करता है स्वीकृत करता है तथा उसका आनन्द उठाता है।''

बी- वस्तुनिष्ठ परिभाषायें -

जोड के द्वारा- "मूल्य उतने ही सत्य होते हैं जैसे- रंग, गन्ध, स्वभाव, आकार व आकृति।''

By Percy "किसी व्यक्ति के लिए वे रुचिकर वस्तुए मूल्य कही जा सकती है जिनके आधार पर व्यक्ति की रूचि एवं वस्तु में एक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है''।

सी-तार्किक परिभाषायें -

डॉ राधाकमल मुखर्जी Dr. R.K. Mukharjee- ''समाज में समस्त ऐसी इच्छाएं या अभिलाषायें मूल्य कहींजाती हैं जो कि अनुबन्धन की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति में अन्तर्निहित हो जाती हैं जो कि समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा भी उस व्यक्ति की प्राथमिक्ताओं,

रूचियों, महत्वांकाक्षाओं के रूप में प्रकट होती हैं।'

मनोवैज्ञानिक विचारधारा- (Psychological View)

मरफी व न्यूकाम - ''मूल्य का अर्थ है लक्ष्य प्राप्ति की ओर उन्मुख होना।'

By Tohes मूल्य वह प्रेरणा हे जो व्यक्ति के प्रयासों को सन्तुष्ट करती है जिससे वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके।'

समाजशास्त्रीय विचारधारा Sociological View By Humallyका विचार है- " जीवन के लक्ष्यों एवं जीवन प्रक्रिया के प्रति मूल्य प्राथमिकता रखते हैं बजाय किसी विशिष्ट कार्य के प्रति रूचि रखने के।''

इस जगत में होने वाला छोटा सा भी परिवर्तन मूल्यों के परिवर्तन फलस्वरूप ही होता है व उसे मूल्यों के आधार पर हीसमझा जा सकता है।

आज समाज में चारो ओर नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट दिखाई देती है। आज भीड़ भरी दुनिया में भौतिकता की आँधी में साम्प्रदायिक संकीर्णता की बाद में प्रतिस्पर्धा की होड में, स्वार्थपरता के तूफान में, हमारे सभी नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक तथा धार्मिक मूल्य बहते जा रहे हैं।

मूल्यों का वर्गीकरण:-

1. **मानव मूल्य :** यह एक ऐसी आचार-संहिता या सदगुण समूह है जिसे मानव अपने संस्कारों तथा पर्यावरण के माध्यम से अपनाकर अपने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन शैली का निर्माण करता है, अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। ये मानव मूल्य एक ओर व्यक्ति को अन्तकरण द्वारा नियन्त्रित होते हैं तो दूसरी ओर उसकी संस्कृति एवं परम्परा क्रमशः निससृत एवं परिपोषित होते हैं। 'बहुजनहित इन जीवन मूल्यों की कसौटी है। इनकी दो श्रेणियॉं हैं
   A. परिवर्तन मूल्य- इन्हें युग धर्म भी कहते हैं। युग धर्म में कुल धर्म, देश धर्म, जाति धर्म, लिंग धर्म, पुत्र धर्म, गुरू धर्म आदि अनेकों धर्म या कर्तव्यों का समावेश होता है।
   B. शाश्वत मूल्य- इन्हें सनातन धर्म कह सकते हैं। सनातन या सामान्य धर्म, जाति, वर्ण अवस्था देश काल आदि से निरपेक्ष होते हैं। युग धर्म तथा सनातन को अलग-अलग बताना बहुत मुश्किल है क्योंकि ये दोनों ही शब्द सापेक्ष हैं।

2. शैक्षिक मूल्य :

शैक्षिक मूल्य शिखा में उपयोगिता, अभिप्राय तथा उपयुक्तता का निरूपण करते हैं जो शिक्षक तथा छात्र को आत्मानुभूति या शिक्षार्थी को उपयुक्त अभिवृद्धि केलिए अध्ययन कार्य में लगने को प्रेरित करते हैं। इसमें प्रमुख बाते हैं-

1. शिक्षण में नियमितता एवं निष्ठा
2. मूल्यांकन में वस्तुनिष्ठता एवं निष्पक्षता
3. स्वस्थ प्रतियोगिता भावना
4. छात्रों की सृजनात्मकता कापोषण
5. मौलिकता प्रति सदभाव आदि
6. नैतिक मूल्य :

ईमानदारी, त्याग निष्ठा, करूणा, दया, उत्तरदायित्व की भावना, नम्रता आदि मूल्य आते हैं। देश काल एवं अन्य परिस्थितियों में ये

कभी-कभी विवादास्पद हो जाते हैं।

3. सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्य:

मूल्य किसी भी समाज या देश की सामाजिक एवं राजनैतिक प्रणाली के परिलक्षण, परिष्कार एवं संवर्धन की अन्यतम इकाई है। इन मूल्यों के अन्तर्गत सामाजिक दायित्व, आदर्श नागरिकता, लोकतन्त्र मानवतावाद, सामाजिक संवेदनशीलता, राष्ट्रीय एकता आदि समाहित है।

4. वैश्विक मूल्य :

जो मूल्य सम्पूर्ण विश्व की प्रगति एवं भलाई से सम्बन्धित होते हैं वे वैश्विक मूल्य होते हैं। इनका किसी जाति, समूह या देश विशेष से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। इसमें समस्त स्वतंत्रता, न्याय एवं अवसर समानता, सभी प्रकार की दासताओं को समाप्त करना आदि मूल्यों का समावेश किया जा सकता है।

5. वैज्ञानिक दृष्टिकोण-

यह मूल्य सदा विवेक बुद्धिजाग्रत कर हमारी अनेक भ्रांतियों एवं अन्ध विश्वासों को दूर करता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण में वस्तुनिष्ठता सृजानात्मक सोच, तथ्यपरकता, तर्कयुक्तता, ज्ञान के प्रति उत्सुकता आदि समाहित हैं।

6. सांस्कृतिक मूल्य:

सांस्कृतिक विरासत को हमेशा बनाये रखने एवं उसके विकास द्वारा राष्ट्र में सांस्कृतिक एकता का वातावरण बनाये रखने में सहायक हैं ये मूल्य।

7. पर्यावरण मूल्य :

इसके अन्तर्गत पेड पौधे प्रति सरोकार, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण शुद्धि प्रति जागरूकता वृक्षारोपण एवं वृक्ष संरक्षण आदि मूल्य आते हैं।

मूल्यपरक शिक्षा के मार्गदर्शन सिद्धान्त

A. मूल्यपरक शिक्षा धार्मिक शिक्षा से भिन्न है। अतः इसमें धर्म विशेष पर वांछित बल नहीं दिया जाना चाहिए।
B. इसको स्वतन्त्र विषय के रूप में पाठ्यक्र में स्थान प्रदान नहीं किया जाना चाहिए।
C. संविधान में निर्देशित मूल्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्वमूल्यपरक शिक्षा के केन्द्र बिन्दु होने चाहिए।
D. मूल्यपरक शिक्षा को समाज की आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था के सन्दर्भ में क्रियान्वित किया जाना चाहिए।
E. मूल्यपरक शिक्षा के कार्यक्रम की सफलता घर विद्यालय के आदर्श वातावरण तथा शिक्षक के आधार पर होनी चाहिए।

उद्देश्य -

1. छात्रों में सहयोग, प्रेम एवं करूणा, शांति एवं अहिंसा, साहस, समानता, बधुत्व, श्रम-गरिमा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, विभेदीकरण की शक्ति आदि मौलिक गुणों का विकास करना।
2. छात्रों को एक उत्तरदायी नागरिक बनने के लिए प्रशिक्षित करना।
3. राष्ट्रीय लक्ष्यों-समाजवाद, धर्म निरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता, लोकतन्त्र का सही ढंग से बोध कराना।
4. देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के सम्बन्ध में उन्हें जागरूक बनाना।

5. निम्न के प्रति समुचित दृष्टिकोण का विकास करना।

अ. स्वयं, अपने साथियों के प्रति स्वदेश प्रति और मानवता प्रति

ब. सभी धर्मों एवं संस्कृतियों के प्रति

स. जीवन एवं पर्यावरण के प्रति।

मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता-

भारत अपनी कला, संस्कृति, दर्शन आदि की गौरवशाली परम्पराओं पर सदैव गर्व करता है परन्तु आज अनास्था तथा पारस्परिक अविश्वास के वातावरण में हमारी प्राचीन परम्परा एवं मूल्य धूमिल से हो गये हैं। आधुनिक अवधारणा में अस्तित्ववादी जीवन,अनात्मपरक नास्तिकता पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानकरण, तर्क प्रधान चिन्तन आदि के कारण अतीत में अविश्वास एवं स्व में अनास्था आदि कारणों से हमारे पुराने मूल्य प्रदूषित हो गयेस्वयं पर अनास्था का परिणाम है आत्मनाश। आज भी मानव-मानव के बीच प्रेम सम्बन्ध है, चाहे वह इच्छित न हो। मानव नारी का सम्मान करता है। वह झूठ, चोरी, डकैती आदि को सही नहीं मानता है।

उक्त वातावरण ने मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता की ओर सभी का ध्यान आकृष्ट कर लिया है। हमने संक्रमण काल में कर्तव्य या कार्य संस्कृति के स्थान पर उपभोक्ता संस्कृति को अपना लिया है। इस उपभोक्ता संस्कृति ने मूल्यपरक शिक्षाकी आवश्यकता को और अधिक प्रबल बना दिया है।

हमारे देश में मूल्य निर्धारण शिक्षा पर अब बल दियाजा रहा है। मूल्य शिक्षाविद्यालयी शिक्षा तक सीमित रहती है मूल्य निर्धारित शिक्षा जीवन भर चलने वाली शिक्षा है। इस प्रकार की शिक्षा में सम्पूर्ण समाज का योगदान है। मूल्य शिक्षा में परीक्षण परिणाम और जीवन परिणाम दोनों सम्मिलित हैं। मूल्य निर्धारित शिक्षा में भी दोनों परिणाम शामिल हैं। इसमें परिक्षण परिणाम पर कम ध्यान देते हैं और जीवन परिणाम ही इसके मुख्य लक्ष्य होते हैं।

मूल्य परक शिक्षा का महत्व :

हमारे जीवन में मूल्यों का अधिक महत्व है। हमारे सभी कार्य किसी न किसी मूल्य से जुड़ा हुआ है। यदि व्यक्ति का पालन पोषण अच्छे वातावरण में हुआ है तो वह नैतिक मूल्यों केा धारण कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर उसे अपने जीवन में अमल करता है। किसी व्यक्ति का पालन पोषण निम्न वातावरण में हुआ है तो वह अनैतिक कार्यों को कर निम्न श्रेणी के मूल्यों को धारण कर अपने लक्ष्य तक पहुंचने में असमर्थ हो अपने भविष्य को अन्धकारमय कर लेता है। हमारे मूल्य शिक्षा के उद्देश्य पर आधारित होते हैं। यदि शिक्षा के उद्देश्य स्पष्ट नही है तो शिक्षा के मूल्य भी स्पष्ट नहीं होंगे।

उचित प्रश्न नैतिकता पर आधारित होते हैं जिनका सम्बन्ध नैतिक मूल्यों से होता है। जो प्रश्न अच्छे, बुरे दोनों में होते हैं वे नैतिक प्रश्न न होकर किसी न किसी मूल्य पर निर्भर होते हैं। सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, राजनैतिक आदि मूल्य हैं। शिखा का सबसे बडा उद्देश्य अच्छी प्रवृत्तियों कों धारण कर अपने जीवनको सार्थक बनाना है। इन सबका चयन करने से पहले उचित एवं अनुचित का ज्ञान होना आवश्यक है, इसे हम शिक्षा से ही प्राप्त कर सकते हैं।

मूल्यों के द्वारा ही व्यक्ति अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करता है। व्यक्ति प्रेम, न्याय, सत्य, मित्रता आदि में उचित क्या है और अनुचित क्या है, ये शिक्षा द्वारा ही निर्णय ले पाता है। उचित अनुचित का निर्णय लेने हेतु व्यक्ति की अपनी-अपनी धारणाएं हैं एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को व्यर्थ समझता है तथा स्वयं को मूल्यवान् क्या मूल्य विभिन्न होंगे या कहीं-कहीं ऐक जैसे यह तय नहीं किया जासकता है।

धारणा :

प्रयोगवादियों के अनुसार कोई तब मूल्यवान बनता है जब किसी उद्देश्य को प्राप्त करता है । गीगर के अनुसार'मूल्य मानव विकतयों के परिणाम प्रतिद्वन्दी मानव रूचियों के बीच होते हैं। उदाहरण के लिए X का स्वाद एक मूल्य बन जाता है जब Y के स्वाद की तुलना में चुना जाता है।'

हमारे मूल्य हमारी रूचियों एवं उनशक्तियेां से सम्बन्धित होते हैं जो हमारी भीतर दबी शक्तियों को बाहर निकालते है। जब हम किसी विचार को प्रकट करते हैं तभी वह मूल्यवानहोता है। एक व्यक्ति जब डॉक्टर बनने का निर्णय लेता है तो उसका आगे पढने तथा एम0बी0बी0एस0 करने का निर्णय उसके लिए मूल्य है। सत्य बोलना भी एक मूल्य है यह मूल्य भलाई के कारणनहीं वरन् यह एक इच्छा और व्यक्ति की अपनी रूचि है। आदर्शवादी सत्य शिवम् सुन्दरम मूल्य में विश्वास रखते हैं।

संवेगात्मक सिद्धान्त में व्यक्ति अपने स्वभाव के कारण व्यवहार करेगा। व्यक्ति अपनी भावनाओं के अनुसार कार्य केमूल्य बनाता है । किन्तु ये भी पूर्ण सत्य नहीं शिक्षित होने पर व्यक्ति अपने अच्छे बुरे कार्य को स्वयं चयन करता है ।

भारतीय सन्दर्भ में मूल्य निर्माण :

भगवत गीता, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, इस्लाम धर्म आदि के दर्शन के बारे में हम पढ़ चुके हैं। इन दार्शनिक विचारों में शिक्षा का समाज एवं ब्राह्माण्ड की मौलिक प्रकृति के साथ आपसी तालमेल मानना चाहिए।

भारतीय आधुनिक शिक्षा में मूल्य-

अब हमारे देश में नैतिक, आध्यात्मिक, सत्यता आदि मूल्य में कमी आ गयी है। विद्यालय भी इससे अछूते नहीं रह गये हैं। विद्यार्थियों पर भी सबसे अधिक असर हुआ है वे भी इन मूल्यों को नही अपना पा रहे हैं अच्छाई बुराई की ओर अग्रसर हो रही है। हम सभी को राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता को बनाये रखने हेतु अपने मूल्यों केो सुरक्षित करना हेागा। बुरी भावनाएं भी अच्छैतिक, आध्यात्मिक भावनाओं की ओर बढ़े ऐसा महोल बनाना हेागा जिससे हम सब एकजुट हो एकता बनाये तथा विश्व को अपना घर बनायें। कहा भी गया है- 'वसुदैव कुटुम्बकम, तथा इस सपने को साकार कर सकें ।

विद्यालय में प्रत्येक विद्यार्थी के साथ पक्षपात नहीं होना चाहिए सबको बराबर देखना चाहिए । ऊँच नीच, छोटा-बडा, कमजोर-शक्तिशाली, जातिपाति आदि को त्याग एकता की सद्भावना को जन्म दे अपने राष्ट्र का नाम स्वर्ण अक्षरों से लिखना चाहिए तभी हम अपने मूल्यों की रक्षा कर सकते हैं ।

मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता :

आज कल आपसी मनमुटाव एवं एक दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ में हम पीछेरह गये हैं । तनाव एवं चिन्ता ग्रस्त अधिक हो जाते हैं। दो टीचर्स आपस में इसका घर मुझसे अधिक अच्छा एवं बड़ा है इसी तुलना में भ्रष्टाचार की ओर बढ़ जाते हैं तथाअपने ईमानदारी, सत्यता, आध्यातिक आदि मूल्यों को गवां बैठते हैं ।

वास्तव में मूल्यपरक-शिक्षा की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति को है। विद्यालयों को मूल्य-परक शिक्षा देने को कहा गया लेकिन आज तक केाई अच्छा एवं सुखद परिणाम नजरनहीं आया। 01 जनवरी 2010 में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी जो हमारे पूर्व राष्ट्रपति थे उन्होंने हिन्दुस्तान समाचार पत्र में अपने सम्पादकीय लेख में 2020 तक विकसित भारत में अन्य प्रयासों के साथ-साथ मूल्य परक शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा में जोडने की आवश्यकता के लिए कहा है ।

यद्यपि मूल्य परक शिक्षा सभी के लिए आवश्यक है किन्तु व्यक्ति स्वयं इसे ग्रहण नहीं कर पा रहा है। यह शिक्षा पठनपाठन में अनिवार्य होनी चाहिए जिससे हमारी संस्कृति एवं सभ्यता सुरक्षित रह सके। जैसे पर्यावरण शिक्षा अनिवार्य रूप से है इसी तरह मूल्य परक-शिक्षा को भी अनिवार्य रूप से सभी कक्षाओं में पढाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष :

वास्तव में मूल्यपरक शिक्षा का हमारे जीवन में अध्याधिक महत्व है। जिस प्रकार विना आभूषण स्त्री की शोभा कम हो जाती है, उसी प्रकार ईमानदारी सत्य, अहिंसा, सौन्दर्यता आदि मूल्यों के विना मानव अधूरा है। इसमें आचरण की रक्षा सर्वोपरि है कहा भी गया है 'वृत्त यत्तेन संरक्षेद' अर्थात् आचारण की रक्षासदैव ही करनी चाहिए धन तो आता है और और चला जाता है। भूल्यपरक शिक्षा राष्ट्र के लिए हमारी संस्कृति की सुरक्षा करती हैं इन मूल्यों को हमें हर विद्यालय के आदर्श वातावरण द्वारा सुरक्षित रखना चाहिए। भूल्यपरक शिक्षा सम्पूर्ण विश्व की एकता अखण्डता को बनाये रखने में बहुत ही महत्वपूर्ण है।अतः हम कह सकते हैं कि हम जो भी व्यवहार करते हैं उस व्यवहार के द्वारा ही हमारे मूल्य प्रदर्शित होते हैं। इसलिए हम सभी को मूल्यपरक शिक्षा की सदैव ही रक्षा करनी चाहिए।

सन्दर्भ :

1. सुनीता अग्रवाल(2014), 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मानवीय मूल्यों से सम्मिलित अध्यापक की आवश्यकता'
2. उमाशंकर कुशवाहा और डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव, 'सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र-छात्राओं में मानवीय मूल्यों का अध्ययन'
3. जी.एस.डी. त्यागी, 'शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार'
4. डॉ. सरोज सक्सैना, 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार'
5. डॉ. एस.एस. माथुर, 'मूल्य एवं शिक्षा